Mh0fyV0 शोध प्रारूप

“खोरठा भाषा विज्ञान का विश्लेषणात्मक अध्ययन”

स्नातकोत्तर खोरठा विभाग
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय
राँची विश्वविद्यालय राँची।

2024

प्रो० डॉ० त्रिवेणी नाथ साहु

पूर्व विभागाध्यक्ष
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची
सह कुलपति
झारखण्ड राज्य खुला विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी

डॉ० निरंजन कुमार
स्नातकोत्तर खोरठा विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

परिचय

किसी भी भाषा का गहन अध्ययन करने में प्रजातीय अध्ययन का महत्व बढ़ जाता है। भाषा परिवार और प्रजातीय अध्ययन के बीच अन्योनाश्रय संबंध हमेशा देखने को मिलता है। दूसरे शब्दों में कहें तो दोनों एक दूसरे का पूरक है। झारखण्ड राज्य में निवास करने वाली जनजातियों और गैर जनजातीय समुदाय के लोग एक साथ आनंदपूर्वक गुजर.बसर करते है। आंशिक परिवर्तन को छोड़कर देखा जाय तो इन दोनों समुदायों के बीच काफी समानता देखने को मिलता है। झारखण्ड राज्य में निवास करने वाली लोगों को प्रजातीय दृष्टिकोण से मूलतः तीन प्रजातीय भागों में विभाजित करके अध्ययन किया जाता है। इनमें से प्रोटो.आस्ट्रोलॉयड प्रजातिए द्रविड़ प्रजाति तथा आर्य प्रजाति का रखा गया है। प्रोटो .अस्ट्रोलायड प्रजाति के अन्तर्गत झारखण्ड राज्य में निवास करने वाली सभी प्रमुख जनजातियों को रखा गया है। इनमें से एक प्रमुख जनजाति उराँव को छोड़कर सभी जनजातियाँ शामिल है। द्रविड़ प्रजाति के अन्तर्गत उरांव जनजाति और आदिम जनजाति समुदाय के सभी जनजातियों को रखा गया है। झारखण्ड की तीसरी प्रमुख प्रजाति आर्य है। आर्य प्रजाति में सभी गैर जनजातीय समुदायों को रखा गया है। इस प्रकार हम पाते है कि प्रोटो.आस्ट्रोलायड प्रजाति में जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय के संथाली, मुण्डारी, हो तथा खड़िया भाषा शामिल है। द्रविड़ प्रजातीय समुदाय में कुडुख तथा मालतो भाषा शामिल है जबकि आर्य प्रजातीय समुदाय के खोरठा, नागपुरी, कुरमाली तथा पंचपरगनिया भाषा इसके अन्तर्गत आता है।

खोरठा झारखण्ड राज्य की एक प्रमुख संपर्क भाषा है। इस भाषा का प्रयोग संपर्क स्थापित करने के लिए खोरठांचल क्षेत्र में निवास करने वाले सभी जनजातीय एवं गैर जनजातीय समुदायों के लोग एक दूसरे के साथ करते है। खोरठा राज्य के सबसे विस्तृत क्षेत्र में बोली जाती है। संपूर्ण झारखण्ड राज्य को प्रमंडलीय आधार पर विभाजित करने से पांच प्रमंडलों में बाँटा जाता है। इनमें से उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल, दक्षिणी छोटानागपुर प्रमंडल, कोल्हान प्रमंडल, पलामू प्रमंडल तथा संथाल परगना प्रमंडल आता है। खोरठा चार प्रमंडलों में संपर्क स्थापित करने के लिए प्रयोग करते है। झारखण्ड राज्य की एक मात्र कोल्हान प्रमंडल में खोरठा भाषा नहीं बोली जाती है। परन्तु अंशिक रूप से वर्तमान समय में संपर्क भाषा के रूप में प्रयोग होने लगी है। उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल को खोरठा भाषा का शुद्ध रूप का प्रयोग एक. दूसरे के साथ अपनी अभिव्यक्ति को प्रकट करने के लिए किया जाता है। दूसरे शब्दों में कहे तो खोरठा भाषा का सर्वाधिक जमघट इसी प्रमंडल में मिलता है। इसके अलावे पलामु प्रमंडल और संथाल परगना प्रमंडल में खोरठा भाषा बोली जाती है। दक्षिणी छोटानागपुर प्रमंडल के सीमावर्ती क्षेत्रों में खोरठा भाषा का गहरा छाप देखने को मिलता है।

प्राकल्पना

किसी भी शोध कार्य में प्राकल्पना का महत्वपूर्ण स्थान रहता है। इसे छोड कर शोध कार्य को संपन्न नहीं किया जा सकता है। प्राकल्पना दो शब्दों के मेल से बना है. जिसका प्रथम शब्द प्रा और द्वितीय शब्द कल्पना है। प्रा का संबंध शोधपूर्व से तथा कल्पना का संबंध विचार से होता है। इस प्रकार प्राकल्पना का शाब्दिक अर्थ शोध कार्य से पूर्व के संबंध में जानकारी हासिल करना होता है। भाषा विज्ञान में प्राकल्पना को विशेष महत्व है। मैं अपने शोध कार्य में निम्नांकित प्राकल्पनाओं को शामिल करेंगे जो इस प्रकार है.

1. खोरठा झारखण्ड का एक समृद्ध भाषा है।
2. खोरठा भाषा में भाषा विज्ञान के तत्व मिलते हैं।
3. खोरठा भाषा का साहित्य विकासशील अवस्था में है।
4. खोरठा भाषा व्याकरण का साहित्य में विशेष स्थान है।
5. खोरठा भाषा साहित्य में अन्य भाषाओं का प्रभाव पड़ा है।

शोध का उद्देश्य

शोध कार्य में उद्देश्य उसके दिशा. निर्देश को निर्धारित करता है। स्पष्ट उद्देश्य से शोध को संपन्न करने में काफी सहायक सिद्ध होता है। उद्देश्य का शोध में विशेष स्थान दिया गया है। यह शोध कार्य को सहजए सरल एवं सुलभ बनाने में अहम भूमिका निभाता है। अपने शोध कार्य में निम्नांकित शोध उद्देश्यों को शामिल किया गया है.

1. खोरठा भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन करना।
2. खोरठा भाषा का भाषा वैज्ञानिक तत्वों का विश्लेषण करना।
3. खोरठा भाषा का भाषा विज्ञान के साथ जोड़कर अध्ययन करना।
4. खोरठा भाषा साहित्य में भाषा विज्ञान के स्वरूपों को खोजना।
5. खोरठा भाषा विज्ञान से जुड़ी विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करना।

शोध का महत्व

किसी भी शोध कार्य में शोध का अतुल्नीय महत्व होता है। शोध कार्य में महत्व को छोड कर इसकी गुणवत्तपूर्ण अध्ययन की कल्पना असंभव से प्रतीत होता है। शोध कार्य को करने के लिए शोध के महत्व को ध्यान में रखकर अध्ययन करना अतिआवश्यक होता है। महत्व शोध कार्य को प्रमुखता से स्पष्ट एवं वस्तुनिष्ट कार्य की ओर अग्रसारित करता है। मेरे शोध से संबंधित निम्नांकित महत्वों को शामिल किया गया है.

1. खोरठा झारखण्ड का एक महत्वपूर्ण क्षेत्रीय भाषा है।
2. खोरठा भाषा का प्रयोग झारखण्ड में सम्पर्क भाषा के रूप में किया जाता है।
3. खोरठा भाषा के प्रति झारखण्ड के छात्रों का झुकाव दिन.प्रतिदिन झुकाव बढ़ते जा रहा है।
4. खोरठा भाषा में भाषा विज्ञान के तत्वों का समावेश पाया जाता है।
5. खोरठा भाषा का व्याकरण एवं साहित्य समृद्ध पाया जाता है।

शोध विधि

शोध कार्य में शोध विधि का होना अतिआवश्यक है। शोध विधि किसी भी शोध को दिशा.निर्देश प्रदान करता है। इससे जानकारी मिलता है कि शोध विषय से संबंधित किस विधि का प्रयोग सर्वाधिक होगा। शोध विधि के जानकारी रहने से किसी भी शोध कार्य को पूर्ण करने में काफी सुविधा होती है। इसके माध्यम से शोधकर्ता को भटकाव की स्थिति उत्पन्न नहीं होती है।

मैं अपने शोध कार्य में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों शोध तकनीकों का प्रयोग करेंगे। प्राथमिक तकनीकों में क्षेत्र कार्य को प्राथमिकता दिया जायेगा तथा द्वितीयक तकनीकों में खोरठा भाषा से जुड़ी साहित्यों का अध्ययन किया जायेगा। भाषा विज्ञान के अध्ययन में खोरठा भाषा एवं हिन्दी साहित्य से जुड़ी प्रमुख भाषा विज्ञान तत्वों का समावेश किया जायेगा। मैं अपने शोध में निम्नांकित शोध विधियों का प्रयोग करेंगे जो इस प्रकार है.

1. साक्षात्कार विधि
2. अनुसूचित विधि
3. प्रश्नावली विधि
4 अवलोकन विधि
5. विश्लेषणात्मक विधि
6. तुलनात्मक विधि

प्रस्तावित अध्यायीकरण

प्रथम अध्याय – खोरठा भाषा का सामान्य परिचय
1. खोरठा भाषा का उद्भव और विकास
2. खोरठा भाषा का भौगोलिक विस्तार
3. खोरठा भाषा का क्षेत्रीय स्वरूप
4. खोरठा भाषा का व्याकरणिक विशेषताएँ

द्वितीय अध्याय – भाषा विज्ञान का वैज्ञानिक अवधारणाएँ
1. ध्वनि विज्ञान
2. शब्द विज्ञान
3. वाक्य विज्ञान
4. अर्थ विज्ञान

तृतीय अध्याय – खोरठा भाषा ध्वनि विज्ञान का अध्ययन
1. ध्वनि विज्ञान का परिचय
2. ध्वनि विज्ञान की विशेषताएँ
3. ध्वनि विज्ञान की वर्गीकरण
4. ध्वनि परिवर्तन के कारण

चतुर्थ अध्याय – खोरठ भाषा शब्द विज्ञान का अध्ययन
1. शब्द विज्ञान का परिचय
2. शब्द विज्ञान के विशेषताएँ
3. शब्द विज्ञान का वर्गीकरण
4. शब्द विज्ञान परिवर्तन के कारण

पंचम अध्याय – खोरठा भाषा वाक्य विज्ञान का अध्ययन
1. वाक्य विज्ञान का परिचय
2. वाक्य विज्ञान के विशेषताएँ
3. वाक्य विज्ञान का वर्गीकरण
4. वाक्य विज्ञान परिवर्तन के कारण

षष्टम अध्याय – खोरठा भाषा अर्थ विज्ञान का अध्ययन
1. अर्थ विज्ञान का परिचय
2. अर्थ विज्ञान के विशेषताएँ
3. अर्थ विज्ञान का वर्गीकरण

4. अर्थ विज्ञान परिवर्तन के कारण

सप्तम् अध्याय – सारांश एवं शोध निष्कर्ष
परिशिष्ट
साक्षात्कार सूची
आधार ग्रंथ सूची
संदर्भ ग्रंथ सूची
खोरठा पत्र.पत्रिकाएँ

आधार ग्रंथ सूची

1 तिवारी, डॉ० भोलानाथ, भाषा विज्ञान, किताब महल, इलाहाबाद, 1993

2 शर्मा, डॉ० आचार्य देवेन्द्रनाथ, शर्मा, दिप्ती, भाषा विज्ञान की भूमिका, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली, 2005

3 शक्सेना कुमार, डॉ० बाबुराम, सामान्य भाषा विज्ञान, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, 1994

4 दीक्षित, डॉ० मीरा, भाषा विज्ञान के सिद्धांत, लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद, 2008

5 द्विवेदी, डॉ० कपिलदेव, भाषा विज्ञान एवं भाषा शास्त्र, विश्वविद्यालय, प्रकाशन वाराणसी, 2006

6 टन्डन, डॉ० प्रेम नारायण, भाषा अध्ययन के आधार, प्रेमनारायण टन्डन, लखनऊ, 1958

7 वर्मा, डॉ० धीरेन्द्र, हिन्दी भाषा के इतिहास, हिन्दुस्तानी एकेडमी, प्रयाग इलाहाबाद,

8 शर्मा, डॉ० राज मणी, आधुनिक भाषा विज्ञान, वीणा प्रकाशन, नई दिल्ली 2000

9 झा, डॉ० ए०के० खोरठा भाषा का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, झारखण्ड झरोखा, रातु रोड़] राँची 2012

10 कुमार, डॉ० अरविंद, खोरठा एवं नागपुरी का तुलनात्मक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, झारखण्ड झरोखा, राँची, 2014

11 ओहदार, डॉ.बी.एन, खोरठा भाषा एवं साहित्य उद्भव एवं विकास, खोरठा भाषा साहित्य.संस्कृति अकादमी, रामगढ़, 2007

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 ‘आला, कृष्ण चन्द्र दास, सईतल साड़ा, आला प्रकाशन, पुष्पा प्रेस, चास, बोकारो 1997

2 ओहदार, रामटहल, मइलाइल हवा, सोसाइटी फॉर हिल एरिया डेवलपमेंट मुद्रक भुरकुण्डा प्रिंटिंग प्रेस, भुरकुंडा

3 ओहदार, बी,एन, खोरठा निबंध, जनजातीय भाषा अकादमी बिहार सरकार रांची 1990

4 करमाली फुतेश्वर खोरठा कविता संग्रह, सहाय प्रिंटर्स बिजुलिया रामगढ़ कैंट, 2004

5 कुमार, डॉ, विनोद सोंधमाटी, जनजातीय भाषा अकादमी, बिहार सरकार, राँची, 1990

6 ‘गणपति, धनपत महतो, कादो फूल, खोरठा ढाकी छेतर कमिटि, कोठार, रामगढ़, 1986

7 गरीब, शिवनंदन पांडेय, खोरठा लोकगीत, बोकारो खोरठा कमिटि, बोकारो, 1994

8 गोस्वामी, मनपूरन, परासचित, बालीडीह खोरठा कमिटी, बालीडीह, बोकारो, 2006

12 झा० ए० के० खोरठा गइद.पइद संगरह बोकारो खोरठा कमिटी बोकारो इस्पात नगर,1989

13 झा० ए०के० खोरठा साहित सदानिक व्याकरण, झारखण्ड झरोखा, रातु रोड, राँची

14 झा० ए०के० खोरठा कांठे पइदेक खंडी, खोरठा ढाकी छेतर कमिटि, कोठार, रामगढ़, 1983

15 झा० ए०के० कविता पुरान, पुष्पा प्रेस, यदुवंश नगर, चास बोकारो, 1994

16 प्रमाणिक, शिवनाथ, दामोदरेक कोरां, खोरठा साहित्य संस्कृति परिषद्, भभुआ, बोकारो, 1986

17 प्रमाणिक, शिवनाथ, रूसल पुटुस, बोकारो खोरठा कमिटी, बोकारो इस्पात नगर

18 पानुरी, श्रीनिवास, चाभी काठी, बालीडीह खोरठा कमिटी, बालीडीह बोकारो, झारखण्ड, 2006

19 प्रबुद्ध, महेन्द्र, तीन काठ धान, उषा पब्लिशिंग हाउस, धनबाद, 2007

20 प्रबुद्ध, महेन्द्र, चंदूलाल चौकीदार, उषा पब्लिशिंग हाउस, धनबाद, 2008

23 प्रमाणिक, शिवनाथ, तातल आर हेमाल, खोरठा साहित्य कुटीर, बैदमारा, बोकारो, 1998

24 भारत, शांति, बेलदरी, बोकारो खोरठा कमिटि, बोकारो, 1990

25 महतो, श्याम सुंदर, चेडराक मुड़े बेल, बालीडीह खोरठा कमिटी, बालीडीह बोकारो

26 महतो, वासुदेव, खोरठा बेयाकरनेक ‘दमराही, खोरठा भाषा साहित्य अकादमी, रामगढ़, 2008

27 महतो, वासुदेव, खोरठा व्याकरण कर एक खेमचा, रॉयल प्रकाशन, सेवासदन पथ, राँची

28 महतो, श्याम सुंदर, तोंय आर हाम, बोकारो खोरठा कमिटि, 1997

29 महतो, संतोष कुमार, एक मउनी फूल, रामधन प्रकाशन, गांगजोरी, बोकारो 1988

30 महतो, श्याम सुंदर, मुक्तिक डहर, शक्तिग्राम विकास संघ, आजाद सिजुआ, भेलाटांड, 1995

31 महतो, पंचम, फरीछ डहर, बालीडीह खोरठा कमिटी, बालीडीह, बोकारो, 2001

32 महतो, घनश्याम, झींगा फूल, सहिया मिलन चिरूडीह, नवाडीह, बोकारो,2000

33 महतो, संतोष कुमार, एक पथिया डोंगल महुआ, रामधन प्रकाशन, गांगजोरी, बोकारो 2005

34 ‘राज विश्वनाथ दसौंधी, पुटुस आर परास, बालीडीह खोरठा कमिटि, बालीडीह, बोकारो, 2004

35 राम, डॉ० डीसी० ढरकल लोर० खोरठा भाषा साहित्य संस्कृति अकादमी, रामगढ़, 2008

36 ‘राज, विश्वनाथ दसौंधी, माटीक पुथइल, बालीडीह खोरठा कमिटी, बालीडीह बोकारो, 2008

37 ‘राज, विश्वनाथ दसौंधी, पुटुस आर परास, बालीडीह खोरठा कमिटी, बालीडीह, बोकारो 2004

38 ‘व्यथित, जनार्दन गोस्वामी, चांदिक जूता, ;कविता, बालीडीह खोरठा कमिटि, बालीडीह, बोकारो 2002

41 ‘वंशी, वंशी लाल, खोरठा दर्पण, खोरठा साहित्य संस्कृति परिषद्, बोकारो,1998

42 'वंशी, वंशी लाल, डिंडाक डोवानी, बोकारो खोरठा कमिटि, बोकारो इस्पात नगर, बोकारो 1992
43 'व्यथित, जनार्दन गोस्वामी, खटरस, बालीडीह खोरठा कमिटी, बालीडीह, बोकारो, झारखण्ड, 2004
44 सुकुमार, बावाँ हाथेक रतन, अखिल झारखण्ड खोरठा परिषद्, भेंडरा, बोकारो, 2009
45 सुकुमार, पइनसोखा, खोरठा भाषा विकास समिति भेण्डरा, गोमो, बोकारो, 1993